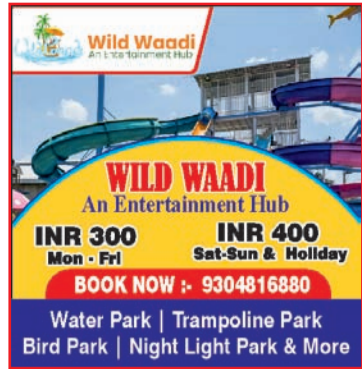


आजाद सिपाही



मुख्यमंत्री ने नियुक्ति और योजनाओं की समीक्षा की सितंबर तक 30 हजार पद भरने का लक्ष्य: हेमंत सोरेन

- नियुक्ति प्रक्रियाओं में तेजी लाने का निर्देश
- बन रहे फ्लाइओवरों का निर्माण जल्द पूरा करने का भी निर्देश
- स्मार्ट सिटी में ताज होटल एवं अपोलो अस्पताल के निर्माण की स्थिति की ली जानकारी



फ्लाइओवर निर्माण कार्य को शीघ्र पूरा करें

हेमंत सोरेन ने पथ निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया कि सिस्मटोली से मेकॉन चौक तक बनाये जा रहे निर्माणधीन फ्लाइओवर निर्माण कार्य को शीघ्र पूरा करें। निर्माण कार्य में अगर कोई बाधा पहुंच रही है, तो उसका जल्द समाधान निकाल कर कार्य प्रगति में तेजी लायें। मुख्यमंत्री

ने नगर विकास विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया कि कांटाटोली फ्लाइओवर निर्माण कार्य भी जल्द पूरा करें, अनावश्यक रूप से किसी भी प्रकार से निर्माण कार्य में विलंब नहीं हो, यह सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिया कि स्मार्ट सिटी रांची में ताज होटल तथा अपोलो अस्पताल का निर्माण

किया जाना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। स्मार्ट सिटी में ताज होटल निर्माण के लिए नगर विकास विभाग के अधिकारी ताज होटल प्रबंधन से समन्वय स्थापित कर शीघ्र कार्य योजना तैयार करें तथा अपोलो अस्पताल स्थापित किये जाने निमित्त सभी जरूरी प्रक्रिया जल्द पूरा करें।

प्रक्रियाओं में भी तेजी लायें। अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को बताया कि उत्पाद सिपाही की दौड़ प्रक्रिया जुलाई के अंत तक और पुलिस बहाली की दौड़ प्रक्रिया 15 अगस्त तक पूरी कर ली जायेगी।

पुलिस पदाधिकारी जनता दरबार लगायें
बैठक में मुख्यमंत्री ने पुलिस अधिकारियों को रांची, जमशेदपुर तथा धनबाद शहर में पुलिसिंग व्यवस्थाओं में सुधार लाने तथा आधुनिक उपकरणों का उपयोग

सुनिश्चित किये जाने का निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने पुलिस अधिकारियों से कहा कि फौलड लेवल पुलिस पदाधिकारी अपने क्षेत्र में जनता दरबार का आयोजन अवश्य करें। पुलिस अधिकारी जनता दरबार लगा कर लोगों की समस्याओं को सुनें तथा उनका निदान भी करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि अर्बन तथा रूरल क्षेत्रों में पुलिस अपनी सक्रियता बढ़ायें, जिससे अपराधियों के मन में भय उत्पन्न हो। बैठक में मुख्य सचिव एल प्लिखान्ते, मुख्यमंत्री के अपर

मुख्य सचिव अविनाश कुमार, प्रधान सचिव गृह विभाग वंदना दादेल, डीजीपी अजय कुमार सिंह, प्रधान सचिव पथ निर्माण विभाग सुनील कुमार, झारखंड कर्मचारी चयन आयोग के अध्यक्ष प्रशांत कुमार, नगर विकास सचिव अरवा राजकमल, एडीजी हेडक्वार्टर आरके मल्लिक, एडीजी ऑपरेशन संजय आनंद लाटकर, आइजी रांची अखिलेश झा, वरीय पुलिस अधीक्षक रांची चंदन सिन्हा सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री रूस के शिखर वार्ता में हुए शामिल जंग से शांति का रास्ता नहीं : मोदी

- राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा : आपकी कोशिशों का हम सम्मान करते हैं

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस दौर के दूसरे दिन राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ शिखर वार्ता में हिस्सा लिया। इस दौरान पुतिन ने कहा कि आप यूक्रेन संकट का जो हल निकालने की कोशिश कर रहे हैं, हम उसके लिए आपके आभारी हैं। वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि एक मित्र के तौर पर मैंने हमेशा कहा कि युद्ध के मैदानों से शांति का रास्ता नहीं निकलता है। वाम, बंदूक और गोलियों के बीच शांति संभव नहीं होती है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि शांति की बहाली में भारत हरसंभव सहयोग करने के लिए तैयार है। शांति के लिए मेरे मित्र पुतिन की बातों को सुन कर मुझे बहुत खुशी है। मैं विश्व समुदाय को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि भारत शांति का पक्षधर है। इससे पहले प्रधानमंत्री मोदी ने विश्व युद्ध के दौरान शहीद हुए जवानों



मोदी को मिला रूस का सर्वोच्च सम्मान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को रूस का सर्वोच्च सम्मान दिया गया है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने देश के अत्यंत प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान 'द ऑर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू द अपोसल' से आधिकारिक रूप से सम्मानित किया। इसके लिए प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति पुतिन को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि यह 140 करोड़ भारतीयों का सम्मान है। यह भारत और रूस के बीच सदियों पुरानी दोस्ती का प्रतिबिंब है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह भारत और रूस के बीच विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त साझेदारी का सम्मान है। पीएम ने कहा कि पुतिन के नेतृत्व में पिछले 25 वर्षों में भारत और रूस के बीच संबंध मजबूत हुए हैं और हर बार नयी उंचाइयों को प्राप्त करते रहे हैं। भारतीय प्रधानमंत्री मोदी ने भारत और रूस के लोगों के बेहतर भविष्य के लिए बात की। उन्होंने कहा कि सभी क्षेत्रों में संबंधों को मजबूत करना होगा। आज कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। ऐसे निर्णय, जिनसे न केवल दोनों देशों को बल्कि पूरी दुनिया को फायदा होगा।

को श्रद्धांजलि दी। इसके बाद वे इस रूसी न्यूक्लियर टेक्नोलॉजी का हब कहा जाता है।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ रमेश शरण का निधन

- मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शोक व्यक्त किया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री और झारखंड के विनोबा भावे विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ रमेश शरण का सोमवार देर रात कोलकाता के एक अस्पताल में निधन हो गया। उनके असाधारण निधन पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने दुख व्यक्त किया है। इसे झारखंड के लिए अपूरणीय क्षति बताया है। उन्होंने सोशल मीडिया 'एक्स' पर पोस्ट



सहन करने की शक्ति प्रदान करने की कामना करता हूँ।

स्व. शरण का कोलकाता के अस्पताल में 69 वर्ष की उम्र में निधन हुआ। उनका अंतिम संस्कार रांची में किया गया। गौरतलब है कि उन्हें लॉस में इफेक्शन था, जिसकी वजह से वे पिछले सात-आठ दिन से बीमार थे। पहले उन्हें रांची के मेडिका अस्पताल में भर्ती कराया गया था। यहाँ तबियत में सुधार नहीं होने के बाद एयर एंबुलेंस से कोलकाता ले जाया गया था। उनके परिवार में उनकी पत्नी और दो बेटियाँ हैं।

लिखा कि मैं डॉ रमेश शरण के निधन से व्यक्तिगत रूप से काफी मर्माहत हूँ, यह झारखंड के लिए बहुत बड़ी क्षति है। मैं मरांग बुरु से उनकी आत्मा की शांति एवं उनके परिजनों को यह दुःख

विधायक के बेटे और पूर्व विधायक आपस में भिड़े

- हजारीबाग में हाथापाई तक की आयी नौबत
- दोनों तरफ समर्थकों की तरफ से पिस्तौल लहराने की भी चर्चा

आजाद सिपाही संवाददाता

चौपारण। बरही विधायक उमाशंकर अकेला के बेटे रविशंकर अकेला और पूर्व विधायक मनोज यादव के बीच आपसी झगड़े की खबर सामने आ रही है। जानकारी के अनुसार दोनों के बीच विवाद इतना बढ़ा कि हाथापाई तक की नौबत आ गयी। प्राप्त जानकारी के मुताबिक चौपारण में बरही विधायक उमाशंकर अकेला के बेटे रविशंकर अकेला और पूर्व विधायक मनोज यादव आपस में



भिड़े गये। समर्थकों के बीच भी झड़प हो गयी। जानकारी मिली है कि यहाँ दोनों गुटों ने पिस्तौल भी तान दी।

हजारीबाग के बरही में कांग्रेस विधायक उमाशंकर अकेला के बेटे रवि यादव और पूर्व विधायक मनोज यादव के बीच झड़प की खबर है। बताया जाता है कि मनोज यादव और उनके समर्थकों

द्वारा विधायक उमाशंकर अकेला का पुतला दहन किये जाने से इस विवाद की शुरुआत हुई थी। इससे उज्जा विवाद बाद में हाथापाई और झड़प में तब्दील हो गया। पूर्व विधायक मनोज यादव ने कहा कि विधायक उमाशंकर अकेला के बेटे ने भाजपा दफ्तर में कार्यकर्ताओं को पीटा और धमकाया भी। मनोज यादव ने कहा

कि जो हथियार, सरकार ने आत्मरक्षा के लिए दिया है, वही हथियार लहरा कर विधायक का बेटा बरही में भय का माहौल बनाता है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार के संरक्षण में विधायक और उनका पुत्र बरही में गैर-कानूनी गतिविधियों में लिप्त हैं। इधर, हालात की गंभीरता को देखते हुए इलाके में अतिरिक्त सुरक्षाबल की तैनाती की गयी है। बरही एसडीपीओ ने कहा कि जैसा कहा जा रहा है, वैसी झड़प नहीं हुई है। थोड़ा-बहुत लड़ाई झगड़ा हुआ है। हम सूचना पर यहाँ पहुंचे हैं। वरीय अधिकारियों को भी सूचित किया गया है। हमारा प्रयास है कि कोई गंभीर विवाद नहीं हो। फोर्स की तैनाती की गयी है। हम इलाके में तनाव नहीं होने देना चाहते।

आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत रांची पहुंचे, बैठक 12 से

- संगठन के सभी प्रांत प्रचारक और प्रांत प्रभारी के पहुंचने का सिलसिला जारी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की वार्षिक बैठक इस बार रांची में हो रही है। इस बैठक में भाग लेने के लिए आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत मंगलवार सुबह रांची पहुंचे। 12 जुलाई से शुरू होने वाली बैठक में भाग लेने के लिए संगठन के सभी प्रांत प्रचारक या प्रांत प्रभारी के पहुंचने का सिलसिला जारी है।

तीन दिवसीय बैठक होगी : संगठन के पदाधिकारी ने बताया



कि तीन दिवसीय बैठक के दौरान प्रांत प्रचारक मई-जून में आयोजित आरएसएस प्रशिक्षण शिविरों की

समीक्षा करेंगे। आने वाले वर्ष में संगठन के विभिन्न कार्यक्रमों के क्रियान्वयन पर भी विचार-विमर्श

करेंगे। प्रांत प्रचारक पूर्णकालिक आरएसएस कार्यकर्ता होते हैं, जो इसके 46 प्रांतों या संगठनात्मक प्रांतों के प्रभारी होते हैं। देशभर के सभी प्रांत प्रचारक बैठक में होंगे शामिल : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रति वर्ष होने वाली अखिल भारतीय स्तर की प्रांत प्रचारक बैठक इस वर्ष आगामी 12, 13 एवं 14 जुलाई 2024 को झारखंड प्रदेश की राजधानी रांची में आयोजित हो रही है। मई-जून में संपन्न संघ के प्रशिक्षण वर्गों की लगभग दो माह की श्रृंखला के बाद देशभर के सभी प्रांत प्रचारक इस बैठक में उपस्थित रहेंगे। संघ की संगठन योजना में कुल 46 प्रांत बनाये गए

हैं। संघ शताब्दी वर्ष (2025-26) के आग्रह एवं उपक्रमों पर बैठक में विचार विमर्श होगा। बैठक से दो दिन पहले पहुंचे सरसंघचालक : सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत, सरकायवाह दत्तात्रेय होसबाले, सभी सहसंघचालक डॉ कृष्णगोपाल, सीआर मुकुंद, अरुण कुमार, रामदत्त, आलोक कुमार, अतुल लिमये सहित कार्यकारिणी के सदस्य इस बैठक में भाग लेने वाले हैं। यह बैठक बेहद खास है। सूत्रों की मानें तो इसीलिए सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत दो दिन पहले विशेष बैठक के लिए रांची पहुंचे हैं।

YASH ENTERPRISES

Deals In :

All Types of CP Bath Fitting,
Pumps, Sanitaryware, Pipes & Fitting

J.J Road, Beside, Deepak Trading
Upper Bazar, Ranchi - 01

Mob.: 9835901322, 9709082614



महंगाई ने तोड़ी आम आदमी की कमर, फिर भी नहीं है मुद्दा

■ आम आदमी की इस सबसे बड़ी समस्या पर कोई बात ही नहीं करता

■ लोगों को आंकड़ों के जाल में उलझा कर बस बयानबाजी ही होती है

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में सबसे अहम लोक होता है, लेकिन भारतीय संदर्भ में लोक आज सबसे हार्शिये पर पहुंच गया है। यह बात हम इसलिए कह रहे हैं, क्योंकि आज आम लोगों की सबसे बड़ी समस्या के बारे में कोई भी राजनीतिक दल या प्रतिनिधि बात नहीं करता। यह सबसे बड़ी समस्या है महंगाई, जिसने आम लोगों को परेशान कर दिया है। आंकड़े बताते हैं कि पिछले पांच साल में एक आम परिवार की आय महज 37 फीसदी बढ़ी है, जबकि महंगाई के कारण उसका खर्च 70 प्रतिशत तक बढ़ गया है। लोकसभा चुनाव

संपन्न हुए अभी एक महीने ही हुए हैं और यदि इसी अवधि की बात की जाये, तो महंगाई करीब 10 फीसदी बढ़ गयी है, जबकि आय में बढ़ोतरी के कोई आसार फिन्हाल नजर नहीं आ रहे हैं। आम लोगों के सामने सुरसा की तरह मुंह बाये महंगाई खड़ी हो गयी है, जो हर दिन उन्हें निगलने के लिए तैयार है। हालत यह

हो गयी है कि आज एक मध्यम आय वाला भारतीय परिवार अपनी रोजमर्रा के खर्च का न तो कोई पूर्वानुमान लगा सकता है और न ही इस पर नियंत्रण कर सकता है। देश की अर्थव्यवस्था का यह सबसे महत्वपूर्ण पुर्जा, यानी मध्य वर्ग उपभोक्ता आज केवल बाजार की महंगाई से परेशान

नहीं है, बल्कि सरकारी नियंत्रण में जो चीजें हैं, उनकी बढ़ती कीमतों ने भी उसे बेहाल कर रखा है। पेट्रोल-डीजल और रसोई गैस के दाम पिछले 10 साल में लगभग दोगुने हो गये हैं। इस पर सबसे दुखद है कि यह मुद्दा किसी भी राजनीतिक दल के एजेंडे में नहीं है और न ही संसद-विधानसभाओं में इस पर चर्चा होती है। राजनीतिक दलों के लिए अब महंगाई कोई मुद्दा नहीं रह गया है। क्या है महंगाई का आलम और आम आदमी कैसे इसके बोझ तले कराह रहा है, बता रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह की खास रिपोर्ट।



राकेश सिंह

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र ने अभी एक महीने पहले ही अपनी नयी सरकार चुनी है, नयी लोकसभा चुनी है और अगले पांच साल के लिए शासन की बागडोर इसे सौंप दी है। इस देश के आम लोगों को अब भी यह उम्मीद है कि उसकी रोजमर्रा की समस्याओं से यह सरकार, यह लोकसभा छुटकारा दिलायेगी। सभी समस्याओं से नहीं, तो कम से कम उसके जीवन से जुड़ी सबसे अहम समस्या से और वह है महंगाई। आज भारत का हर आम परिवार महंगाई से इतना त्रस्त है कि उसे आगे का रास्ता ही नहीं सूझ रहा है। उसके इस चाव पर नमक छिड़क रहे हैं राजनीतिक दल और उसके चुने हुए प्रतिनिधि, जिनके पास इस मुद्दे पर बात करने का समय नहीं है।

क्या कहते हैं महंगाई के आंकड़े

जून महीने में सब्जियों और दालों में महंगाई में तेजी बनी हुई है। दालों के दाम में उछाल आया है, तो सब्जियों की महंगाई दर मई

में 27.33 फीसदी रही है, जो अप्रैल में 27.80 फीसदी रही थी। फलों की महंगाई दर 6.68 फीसदी रही है, जो अप्रैल में 5.94 फीसदी रही थी। अनाज की महंगाई दर मई में 8.69 फीसदी रही है, जो अप्रैल में 8.63 फीसदी रही थी। मसालों की महंगाई दर घटकर मई में 4.27 फीसदी पर आ गयी है, जो अप्रैल में 7.75 फीसदी रही थी। चीनी की महंगाई दर घटकर 5.70 फीसदी ही है, जो अप्रैल में 6.73 फीसदी रही थी। आलू-प्याज और सब्जियों के दाम बढ़ने से आम आदमी हाँफ रहा है।

भोजन भी 71 फीसदी महंगा हुआ

लोकसभा चुनाव के दौरान नेताओं के मुँह से भले ही महंगाई का ज्यादा शोर नहीं सुनाई दे रहा हो, लेकिन जनता इससे परेशान है। एक सर्वे के मुताबिक करीब 23 प्रतिशत लोग इसे बड़ा चुनगी मुद्दा मानते भी हैं। आंकड़े बताते हैं कि पांच साल में जहां घर में तैयार शाकाहारी खाने की थाली की औसत कीमत 71 फीसदी तक बढ़ गयी है, वहीं इस दौरान नियमित नौकरी करने वाले लोगों की मासिक आय मात्र 37 प्रतिशत बढ़ी है। हालांकि अस्थायी काम करने वालों (केजुअल मजदूरों) की कमाई इस दौरान 67 प्रतिशत बढ़ी है। लेकिन एक सच यह भी है कि इन मजदूरों की कमाई का बड़ा हिस्सा खाना पर ही खर्च होता है। झारखंड के आंकड़े बताते हैं कि एक आम मध्यम वर्गीय परिवार के चार सदस्यों के लिए दो बार का शाकाहारी भोजन बनाने के लिए जरूरी सामग्रियों की औसत लागत इस साल 79.20 रुपये हो गयी है, जबकि



पिछले साल यह 64.20 रुपये और 2019 में 46.20 रुपये आंकी गयी थी। इस तरह झारखंड के एक घर में हर दिन दो शाकाहारी थाली बनाने की मासिक लागत 2019 में 1386 रुपये से बढ़ कर 2024 में 2377 रुपये हो गयी है।

ऐसे निकाली गयी दो थालियों की कीमत

यह जानने के लिए कि झारखंड में घर पर औसतन दो शाकाहारी थालियों की कीमत

कितनी है, उसे बनाने में इस्तेमाल की जाने वाली सामग्रियों की कीमत निकाली गयी। थाली में सफेद चावल, कोई एक दाल, प्याज, लहसुन, हरी मिर्च, अदरक, टमाटर, आलू, आटा, हरी सब्जी, तेल, मसाला और नमक के अलावा एलपीजी सिलिंडर या बिजली और मेहनत की कीमत का आकलन किया गया। इसके बाद खपत की जानेवाली सामग्री की कीमत निकाली गयी। फिर उस कीमत को कमाने में खर्च की गयी रकम, यानी पेट्रोल-डीजल या भाड़ा जैसे

खर्च को जोड़ा गया। तब अंतिम तौर पर यह आंकड़ा तैयार किया गया। खास बात यह है कि इसमें शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन और सामाजिक खर्च शामिल नहीं हैं, जो एक मध्य वर्ग परिवार के सिर पर हमेशा मंडराता रहता है।

क्या है वास्तविक स्थिति

आज एक आम भारतीय मध्यवर्ग परिवार हर पल इसी चिंता में डूबा रहता है कि जीवन की जद्दोजहद में वह अपने

भविष्य की चिंता करे या वर्तमान की। महंगाई ने यकीनन पहले से सुलग रही समस्याओं की आग को और अधिक प्रज्वलित कर दिया है। सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद आम भारतीय की रोजमर्रा की परेशानियां दूर होने के स्थान पर बढ़ती जा रही हैं। केवल पेट्रोल-डीजल और रसोई गैस ही नहीं, सरकार के नियंत्रण की हर चीज की कीमत बिना किसी पूर्व सूचना के बढ़ती जा रही है। चाहे रेल किराया हो या विमान का भाड़ा, टोल टैक्स हो या सरकारी

अस्पतालों में जांच की दर, हर जगह महंगाई की आग ने तबाही मचा रखी है। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है, जब खपत कम हो रही है, लोग परेशान हैं, मांग पर कोई अंतर नहीं पड़ा है, कच्चे माल की कीमत नहीं बढ़ी है, तो फिर सरकार आखिर इस महंगाई पर नियंत्रण क्यों नहीं करती। दरअसल हमारे देश में ऐसी अर्थनीति बन चुकी है, जो एकदम ही अमीर कॉर्पोरेट सेक्टर को फायदा पहुंचा रही है। इसके कारण आम आदमी की जिंदगी दुश्वार हो गयी है। पिछले पांच वर्षों से जारी महंगाई दर ने पिछले सभी रिकॉर्ड ध्वस्त कर दिये हैं। अमीर आदमी को यकीनन महंगाई से कुछ भी फर्क नहीं पड़ता, लेकिन एक गरीब इंसान की हालत किन्हीं बदतर हो चली है, इसका कुछ भी अंदाजा न सरकार को है और न राजनीतिक दलों को।

हालत यह है कि भारत के वर्तमान राजनीतिक माहौल ने कमरतोड़ महंगाई के सवाल पर जन मानस के गुस्से की अभिव्यक्ति को अत्यंत असहज कर दिया है, अन्यथा अपनी माली हालत को लेकर आम आदमी के भीतर जो जबरदस्त ज्वालामुखी धधक रहा है, उसके विस्फोट से एक अलग समस्या पैदा हो सकती थी। अमीर तबके के और अधिक अमीर हो जाने की अंतहीन लालच की खातिर आम आदमी को निचोड़ा जा रहा है। महंगाई के सवाल पर आम आदमी का रोप इसलिए भी राजनीतिक जोर नहीं पकड़ रहा कि प्रायः सभी राजनीतिक दलों के नेताओं का अपना चरित्र भी कॉर्पोरेट परस्त होता जा रहा है। सांसद-विधायक अपना वेतन-भत्ता कई गुना बढ़ा चुके हैं।

सरकारी आंकड़े बताते हैं कि पिछले पांच वर्ष के दौरान खाने-पीने की वस्तुओं के दाम 16.5 प्रतिशत की दर से बढ़े हैं। यह दर हर तीन महीने पर तय होती है। चीनी के दाम 73 फीसदी, मूंग दाल की कीमत 113 फीसदी, उड़द दाल के दाम 71 फीसदी, अनाज के दाम 20 फीसदी, अरहर दाल की कीमत 58 फीसदी और आलू-प्याज के दाम 32 फीसदी बढ़ गये हैं। इसके अलावा खुदरा के दामों और थोक दामों में भारी अंतर बना ही रहता है। सरकारी आंकड़े महज थोक सूचकांक बताते हैं, जबकि आम आदमी तक माल पहुंचने में बहुत से बिचौलियों और दलालों की जेबें गरम हो चुकी होती हैं। वैसे भी भारत की अर्थव्यवस्था अब संतोरीयों और बिचौलियों के हाथों में ही खेल रही है। अपना खून-पसीना एक करके उत्पादन करने वाले किसानों की कमर कर्ज से झुक चुकी है। खुदरा बाजार में खाद्य पदार्थों के दाम चाहे कुछ भी क्यों न बढ़ जायें, किसान वर्ग को इसका फायदा कदाचित नहीं पहुंचता। इतना ही नहीं, धीरे-धीरे उनके हाथ से उनकी जमीन भी छिनती जा रही है।

हाइकोर्ट ने राज्य सरकार से पूछा

13 वर्षों के बाद भी धनबाद में रिंग रोड क्यों नहीं बना ?

आजाद सिपाही संवाददाता रांची। धनबाद में वर्ष 2011 में प्रस्तावित रिंग रोड के निर्माण कार्य शुरू नहीं किये जाने को झारखंड हाइकोर्ट ने गंभीरता से लिया है। इससे संबंधित एक जनहित याचिका की सुनवाई करते हुए कोर्ट ने मौखिक कहा कि 13 वर्ष बीत जाने के बाद भी धनबाद में रिंग रोड के निर्माण का कार्य शुरू नहीं किया गया, इसके लिए जमीन भी राज्य सरकार ने लोगों से अधिग्रहित कर ली है। जमीन अधिग्रहण को लेकर मुआवजा के रूप में सरकार ने 76 करोड़ रुपये भी खर्च कर दिया है, लेकिन अब तक इसका निर्माण कार्य क्यों नहीं



शुरू किया गया? जमीन अधिग्रहण होने से कई लोगों की जमीन चली गयी, लेकिन क्यों बाद भी उनकी जमीन का सदुपयोग नहीं हुआ। कोर्ट ने राज्य सरकार को जवाब दाखिल कर बताने को कहा है कि धनबाद में रिंग रोड बनाने की लेकर क्या कार्रवाई की गयी? मामले की अगली सुनवाई 15 जुलाई को होगी। इससे पूर्व प्रार्थी की ओर से कोर्ट को बताया गया

कि 16 मई 2011 को राज्य सरकार ने धनबाद में रिंग रोड बनाने के लिए अधिसूचना निकाली थी। सरकार की एजेंसी झरिया पुनर्वास एवं विकास प्राधिकार को रिंग रोड बनाने की जिम्मेदारी मिली थी। लेकिन रिंग रोड के लिए कोई निमान नहीं बनाया गया और इसका निर्माण कार्य 13 वर्षों के बीत जाने के बाद भी शुरू नहीं हुआ है। सरकार की ओर से वर्ष 2011 में ही धनबाद के धनसार, झरिया, मनाइटाड़ आदि जगह में लोगों की जमीन ली गयी थी, जिसमें जमीन अधिग्रहण के मद में राज्य सरकार की ओर से 76 करोड़ रुपये की राशि को खर्च की गयी थी।

15-18 आयुवर्ग के ड्रॉपआउट स्कूली बच्चों को पढ़ाई का अवसर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करायेँ बच्चे

आजाद सिपाही संवाददाता रांची। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के तहत समग्र शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद के द्वारा आउट ऑफ स्कूल या ड्रॉपआउट हो चुके 15-18 आयुवर्ग के बच्चों को अपनी पढ़ाई राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयों शिक्षा संस्थान (एनआइओएस) के माध्यम से जारी रखने का अवसर मिल रहा है।

झारखंड शिक्षा परियोजना की पहल पर ऐसे बच्चे जो 15 से 18 आयुवर्ग के हैं और किन्हीं कारणों से विद्यालय नहीं जा पाये हैं, ऐसे ड्रॉप आउट हो चुके हैं, वे 27 जुलाई की शाम पांच बजे तक ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन लिंक पर पंजीकरण करा सकते हैं। वे अपनी इच्छानुसार वर्ग 3/5/8/10/12 कक्षाओं की पढ़ाई पूरी करने के लिए पंजीकरण करावा

सकेगें। इसके माध्यम से झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद द्वारा उक्त आयुवर्ग के बच्चों की संख्या ज्ञात की जा रही है। झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद के निदेशक आदित्य रंजन ने ऐसे बच्चे और उनके अभिभावकों से अपील की है कि जो बच्चे विद्यालय से बाहर रह गये हैं या ड्रॉपआउट हैं वे पुनः अपनी पढ़ाई आरंभ करें और उसे उन्हें पूर्ण करें।

चोरों ने की पहले चोरी, फिर घर में बनी मछली भी खा गये

बगोदर। गिरिडीह के बगोदर थाना क्षेत्र अंतर्गत दौदलो पंचायत के दिहारा गांव में देर रात चोरों ने चार घरों में घुसकर चोरी की घटना को अंजाम दिया है। यहां तक कि चोरों ने एक घर में बनी मछली की सब्जी को भी नहीं छोड़ा और चटकर चलते बने। घर के मालिकों को जब इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने इसकी सूचना पुलिस को दी। इधर गिरिडीह के दिहारा गांव में हुई वारदात से ग्रामीणों में डर का माहौल व्याप्त है। प्रखंड प्रमुख और मुखिया ने पुलिस को जल्द से जल्द मामले का खुलासा करने का आग्रह किया। भुक्तभोगियों ने बताया कि उनके घरों से हजारों रुपये समेत आभूषणों और बर्तनों की चोरी हुई है। उन्होंने यह भी बताया कि चोरों ने बारी-बारी से सभी के घर में घटना को अंजाम दिया है। चोरों ने भुक्तभोगी जानकी महतो के घर से चार हजार रुपये नगद, बर्तन, चांदी का समान व कपड़ा ले गये। घटना के वक्त परिवार के सभी सदस्य छत पर सो रहे थे। उनके घर पर उस रात मछली की सब्जी बनी थी उसे भी वह चट कर गये। वहीं, अन्य तीन घर के मालिकों ने बताया कि हमलोग दूसरे घर में रह रहे थे। तभी चोरों ने रात में ताला तोड़ कर चोरी की घटना को अंजाम दिया। इधर, चोरी की घटना की सूचना पाकर उप-प्रमुख हरेंद्र कुमार सिंह और मुखिया तुलसी महतो सभी भुक्तभोगियों के घर पहुंचे और मामले की जानकारी ली।

गांडेय विधायक कल्पना सोरेन ने अधिकारियों के साथ की समीक्षा बैठक



संगलवार को गांडेय विधायक कल्पना सोरेन ने गिरिडीह में गांडेय विधानसभा क्षेत्र में चल रही विभिन्न योजनाओं से जुड़े मामलों को लेकर आयोजित समीक्षा बैठक में शामिल हुईं और अधिकारियों को उचित दिशा निर्देश दिया।



अरगा नदी पर पुल धंसने के मामले में इंजीनियर और ठेकेदार पर कार्रवाई की तैयारी, जांच तेज

आजाद सिपाही संवाददाता रांची। राज्य सरकार गिरिडीह के अरगा नदी पर पुल धंसने के मामले में कड़ी कार्रवाई करने की तैयारी में है। पथ निर्माण विभाग ने वहां के कार्यपालक अभियंता सहित सहायक अभियंता व कनीय अभियंताओं से स्पष्टीकरण पूछा है। सरकार के स्तर पर गठित टीम भी लगातार इसकी जांच कर रही है। विगत दिनों में टीम का भ्रमण भी वहां हुआ था, लेकिन अधिक पानी की वजह से पुल धंसने के कारणों की सही से जांच नहीं हो सकी।

गुणवत्ता में लापरवाही को देखते हुए कार्रवाई करने के मुद्दे में है। जून माह के अंतिम दिन गिरिडीह-जमुई को जोड़ने वाले भेलवाघाटी के अरगा नदी पर पुल धंस गया था। पांच साल से इस योजना पर काम चल रहा था संवेदक रंजन गुप्ता ने जब सॉर्टिंग सेट करवा कर ढलाई किया तो नदी के तेज बहाव में पुल का एक स्मैन टूट कर गिर गया। वहीं एक जगह पीयर टेढ़ा भी हो गया। लगभग पांच करोड़ की लागत से इस पुल का निर्माण कराया जायेगा।



जेएमएम नेता ने भाजपा पर साधा निशाना बाबूलाल मरांडी की किस्मत में नहीं है मुख्यमंत्री की कुर्सी : हेमलाल मुर्मू

हेमंत माने सोना, जितना तपेगा उतना ही चमकेगा : हेमलाल मुर्मू

आजाद सिपाही संवाददाता
रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ नेता और पूर्व सांसद हेमलाल मुर्मू ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी को पता होना चाहिए था कि हेमंत का मतलब सोना होता है। सोना को जितना तपाया जायेगा वह उतना ही ज्यादा चमकेगा। आज हेमंत सोरेन सोने की तरह की चमक रहे हैं। हेमलाल मुर्मू ने कहा कि विधानसभा में विश्वास मत हासिल करने के बाद हेमंत सोरेन बड़े आदिवासी नेता के रूप में स्थापित हो चुके हैं। इंडिया गठबंधन के घटक दल के नेताओं ने भी इसको स्वीकार किया है।



विश्वास मत हासिल करना वाकई में जनता की जीत है।

बीजेपी ने हेमंत के खिलाफ साजिश की

मंगलवार को पार्टी कार्यालय में

कहा कि जमानत देते हुए झारखंड हाइकोर्ट ने जो टिप्पणी की है, उससे स्पष्ट होता है कि एक निर्दोष व्यक्ति को फंसाकर राजनीतिक लाभ लेने के उद्देश्य से यह कर्मकांड किया गया था। हेमलाल मुर्मू ने कहा कि बाबूलाल मरांडी, बीजेपी की पालकी ढोयें। उनके नसीब में वही है। मुख्यमंत्री की कुर्सी उनके नसीब में नहीं है। उन्होंने कहा कि गठबंधन दल, आगामी विधानसभा चुनाव में बहुमत हासिल कर दोबारा सरकार बनायेगा। बीजेपी इससे आगे नहीं बल्कि और नीचे ही जायेगी। उन्होंने कहा कि लोकियन हेंब्रम की सदस्यता खत्म करने का मामला स्पीकर न्यायाधिकार में चल रहा है। उनके खिलाफ आरोप साबित हो चुका है।

आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में हेमलाल मुर्मू ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की वजह से हेमंत सोरेन को 5 महीने का कठिन कारावास जेल में गुजारना पड़ा। हालांकि, वह जेल पर बाहर निकल आये। हेमलाल मुर्मू ने

झामुमो पर भारतीय जनता पार्टी का पलटवार जेएमएम कभी सरकार में वापस नहीं आयेगा : प्रतुल शाहदेव

बाबूलाल मरांडी का डर गठबंधन सरकार के सिर चढ़ कर अभी भी बोलता है

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने झारखंड मुक्ति मोर्चा की प्रेस वार्ता पर पलटवार करते हुए कहा कि अब यह राजनीतिक मृत्यु शैथ्या पर पड़े हैं और दिन में ही बड़े-बड़े सपने देख रहे हैं। प्रतुल ने कहा इस सरकार के बारे में प्रचलित कहावत है कि कोई ऐसा सगा नहीं, जिसे हेमंत सरकार ने ठगा नहीं। बेरोजगार, किसान, महिला, युवा, मध्यम वर्ग - सब इस सरकार के गलत निर्णयों और भ्रष्टाचार का शिकार हुए हैं। यह सरकार अब दोबारा सत्ता में कभी नहीं आने वाली है। वैसे भी एनडीए को पिछले लोकसभा



चुनाव में 52 विधानसभा सीटों पर बढ़त मिली थी। वहीं सत्ताधारी गठबंधन 27 सीटों पर सिमट गया था। प्रतुल ने कहा कि इस सरकार को बाबूलाल मरांडी का खौफ हमेशा सिर चढ़ कर बोलता है। इन लोगों को सोते जागते बाबूलाल ही याद आते हैं। क्योंकि इनको पता है बाबूलाल मरांडी की अध्यक्षता में भारतीय जनता पार्टी गठबंधन आगामी विधान सभा चुनावों में बड़ी जीत की ओर अग्रसर हो रही है। उन्होंने कहा जो लोग आज बाबूलाल मरांडी

को कभी मुख्यमंत्री बनने का ख्वाब नहीं देखने की बात कह रहे हैं, वह अगले चुनाव के बाद बेरोजगार हो जायेंगे और चौक चौराहे पर मूंगफली फांकते हुए दिखेंगे। प्रतुल ने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा गलत बयानी पर उतर आया है। प्रतुल ने कहा कि अब झारखंड मुक्ति मोर्चा और कांग्रेस के नेता जोश में होश को खो बैठे हैं और कह रहे हैं कि जैसा हाइकोर्ट का निर्णय आया वैसे ही सुप्रीम कोर्ट में भी निर्णय आयेगा। अब क्या ये सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश की भूमिका में भी आ गये हैं? प्रवक्ता प्रतुल शाह देव ने राज्य सरकार पर मामला बोलते हुए उसे बांग्लादेशी घुसपैठियों का संरक्षक बताया। प्रतुल ने कहा कि बांग्लादेशी सीमा से बड़े पैमाने पर जो घुसपैठिए भीतर घुस आये हैं, उनको राज्य सरकार राजनीतिक संरक्षण दे रही है।

दक्षिण पूर्व रेलवे - निविदा

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए, वॉल्ट मंडल विद्युत इंजीनियरिंग (सा.), दक्षिण पूर्व रेलवे, खड़गपुर-721301 द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए मर के सामने उद्घिष्टित निविदा को 12.00 बजे से पूर्व ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा सूचना सं. (i) 114-इंफ्लेसी-जी-केजीपी-24-25-16, नीमपुरा सिंक लाइन पर सिंक लाइन के विस्तार, फ्रेट अवसंचना का संवर्धन, आद्यनाट फ्लोरोिंग, सेवा भवन के प्रतिस्थापन आदि के लिए विद्युत कार्य। निविदा मूल्य: ₹. 1,92,22,045.87, बोली प्रतिभूति/बयाना राशि: ₹. 2,46,100/-, निविदा सूचना सं. (ii) 114-इंफ्लेसी-जी-केजीपी-24-25-21, खड़गपुर मंडल: वॉल्ट डीईई (जी)/केजीपी के अधीन अर्बिग व्यवस्था (क्वार्टर, सेवा भवन, पोल, सब-स्टेशन आदि), लाइटिंग अरेरर (पोल संरचना और सेवा भवन) तथा सीएलएस पैनल (विभिन्न स्टेशन और एलसी) की आपूर्ति, स्थापना और आंभ करने के लिए विद्युत कार्य। निविदा मूल्य: ₹. 2,29,16,436.43, बोली प्रतिभूति/बयाना राशि: ₹. 2,64,600/-, खुले की तिथि: दिनांक 31.07.2024 प्रत्येक हेतु। निविदा कागजात का मूल्य: प्रत्येक के लिए शून्य। समायोजन अर्बिग: क्रम सं. (i) एवं (ii) के लिए स्वीकृति पत्र जारी करने की तिथि से 12 माह। जमा करने की तिथि: दिनांक 31.07.2024 को 12.00 बजे तक प्रत्येक हेतु। इच्छुक निविदाकार निविदा के संगणक विनिर्णय, वर्णन और विनिर्देश के लिए वेबसाइट www.ireps.gov.in देख सकते हैं एवं अपनी बोली ऑनलाइन जमा करें। किसी भी परिस्थिति में इन कार्यों के लिए मैन्युअल निविदा स्वीकार नहीं की जाएगी। दृष्टव्य: प्रस्तावित बोलीदाता सभी निविदाओं में भाग लेने के लिए, www.ireps.gov.in नियमित रूप से देख सकते हैं। (PR-355)

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें

www.azadsipahi.in

हेमंत कैबिनेट के मंत्रियों ने पदभार ग्रहण किया

बन्ना गुप्ता, दीपिका पांडेय, सत्यानंद भोग्ता, इरफान, मिथिलेश, वैद्यनाथ समेत अन्य नवनि्युक्त मंत्री पहुंचे अपने-अपने विभाग



आजाद सिपाही संवाददाता
रांची। हेमंत कैबिनेट के मंत्रियों ने सोमवार को शपथ ले ली। उनके बीच विभागों का भी बंटवारा कर दिया गया है। इसी के साथ मंगलवार को मंत्रियों के पदभार ग्रहण करने का सिलसिला शुरू हो गया। मंगलवार को बन्ना गुप्ता, दीपिका, सत्यानंद भोग्ता, इरफान अंसारी, मिथिलेश ठाकुर, वैद्यनाथ राम समेत अन्य नवनि्युक्त मंत्री पहुंचे अपने-

अपने मंत्रालय पहुंचे और पदभार ग्रहण किया। स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता ने नेपाल हाऊस स्थित अपने कार्यालय में पदभार ग्रहण करने के बाद कहा कि इस बार सीएचसी, पीएचसी, अनुमंडल और जिला स्तर के अस्पतालों को विशेष विनीय अधिकार देने की व्यवस्था की है। इसके लिए कैबिनेट की सहमति से अलग से एक अरब रुपये का बजटीय उपबंध किया है। ऐसा होने से अस्पतालों की सभी छोटी-मोटी

बुनियादी जरूरतों को उसी स्तर पर पूरा कर लिया जायेगा। इसके लिए विभागीय स्तर की लंबी चौड़ी प्रक्रिया से नहीं गुजरना होगा। झामुमो कोटे से मंत्री बने मिथिलेश ठाकुर ने पेयजल एवं स्वच्छता विभाग का कार्यभार संभाल लिया। उन्होंने हर घर नल से जल पहुंचाने के लिए जारी जल जीवन मिशन के काम में तेजी लाने की बात कही। वहीं, पहली बार मंत्री बने इरफान

धनबाद में कार्यकर्ता सम्मान सह विजय संकल्प सभा का आयोजन झारखंड को ठगबंधन सरकार से मुक्ति दिलाने का संकल्प लें: बाबूलाल मरांडी

कार्यकर्ताओं के परिश्रम से बनी तीसरी बार मोदी सरकार : पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने मंगलवार को धनबाद में कार्यकर्ता सम्मान एवं विधानसभा स्तरीय विजय संकल्प सभा को संबोधित किया। श्री मरांडी ने बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता ही जमीनी स्तर पर पार्टी की विचारधारा के लिए जूझता है, संघर्ष करता है। जनता से संवाद करता है, रोज-रोज होने वाले कार्यक्रमों को सफल बनाता है। कहा कि ऐसे कार्यकर्ता ही पार्टी की पूंजी हैं। इनका मान सम्मान बढ़ाना नेतृत्व का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि आज तीसरी बार मोदी सरकार की ऐतिहासिक उपलब्धि कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम का ही परिणाम है। श्री मरांडी ने कहा कि अब कार्यकर्ताओं का एक ही लक्ष्य है। राज्य की भ्रष्ट, ठगबंधन सरकार से मुक्ति दिलाना। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने युवाओं को रोजगार और बेरोजगारी भत्ता का



वाद कर वोट तो प्राप्त किया लेकिन सत्ता में आते ही भुला दिया। सदन में मुख्यमंत्री ने 5 लाख नौकरी देने, बेरोजगारी भत्ता देने की बात कही लेकिन नौकरी देने के नाम पर नौकरियों की बोली लगायी गयी। प्रश्न पत्र लाखों में बेचे गये। जेपीएससी, जेएसएससी की सभी परीक्षाएं भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गयीं। युवाओं का भविष्य बर्बाद कर दिया। उन्होंने कहा कि राज्य की विधि-व्यवस्था ध्वस्त है। रोज हत्याएं हो रही हैं। राजधानी में सरेआम गोलियां चल रही। जेल से भी अपराधी धमकी दे रहे। व्यवस्थियों से खुलेआम फिरोती मांगी जा रही। ऐसे में राज्य में कौन उद्योग धंधा लगायेगा। लगे हुए भी

बंद हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस पदाधिकारी वसूली में लगे रहते हैं। अपराधी बेखौफ अपराध को अंजाम देते हैं। बहन-बेटियां अशुश्रुत हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में खनिज संसाधनों, बालू, पत्थर, जमीन को लूट मची है। बिना पैसे का कोई काम नहीं होता। कहा कि ठगबंधन सरकार अपनी योजनाओं के साथ केन्द्र सरकार की योजनाओं को भी भ्रष्टाचार में झोंक दिया। आयुष्मान योजना, नल जल योजना की स्थिति दयनीय है। लोग पीने के पानी के लिए तरस रहे। उन्होंने कहा कि 24 वर्ष के युवा झारखंड में 10 वर्षों से ज्यादा इसी ठगबंधन का शासन रहा है। लेकिन इस दौरान केवल घपले,

घोटाले और भ्रष्टाचार ही हुए। कहा कि राज्य में जो भी विकास दिखता है वह भाजपा और एनडीए सरकार की देन है। उन्होंने कहा कि राज्य की जनता ऐसी भ्रष्ट सरकार से ऊब चुकी है। जनता निजात चाहती है। जिसका स्पष्ट संकेत लोकसभा चुनाव में दिया है। राज्य के 52 विधानसभा क्षेत्र में एनडीए की बढ़त हुई है। उन्होंने कहा कि राज्य में सुरासन, विकास को सुनिश्चित कराने के लिए ठगबंधन सरकार को उखाड़ फेंकना जरूरी है। विजय संकल्प सभा में पूर्व सांसद पीएन सिंह, धनबाद विधायक राज सिन्हा, संजय झा समेत भाजपा के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद थे।

धनबाद के वासेपुर के डॉन फहीम खान के भांजे की हत्या, पुलिस जांच में जुटी

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। धनबाद वासेपुर में एक बार फिर हत्या से ससंजी फैला खन। जेल में बंद गैंगस्टर फहीम खान के भांजे की हत्या कर रेलवे ट्रैक पर फेंकने की घटना सामने आयी है। भूली थाना क्षेत्र स्थित सिल्वर डब स्कूल के पास रेलवे लाइन के किनारे गैंगस्टर फहीम खान और शेर खान के भांजे 25 वर्षीय गुल खान को अज्ञात अपराधियों ने हत्या कर रेलवे ट्रैक के समीप शव को फेंक दिया। शव पूरी तरह लहलुहान हालत में पाया गया। गुल खान को परिजनों और स्थानीय पुलिस ने पहले निजी



अस्पताल में लाया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वहीं भुली थाना की पुलिस शव को

कब्जे में लेकर जांच में जुटी है। फिलहाल शव को एसएनएमएमसीएच अस्पताल

ओबीसी एकता अधिकार मंच ने जाति आधारित जनगणना कराने की मांग की ओबीसी को सभी क्षेत्रों में हिस्सेदारी और भागीदारी सुनिश्चित करायें राज्य सरकार : ब्रह्मदेव प्रसाद

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। ओबीसी एकता अधिकार मंच ने झारखंड प्रदेश में जाति आधारित जनगणना कराने और जनसंख्या के अनुपात में ओबीसी को सभी क्षेत्रों में हिस्सेदारी व भागीदारी सुनिश्चित कराने की मांग की। मंगलवार को इस संबंध में मोर्चा के केन्द्रीय अध्यक्ष ब्रह्मदेव प्रसाद ने रांची स्थित केन्द्रीय कार्यालय हरमू में प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया। मौके पर ब्रह्मदेव प्रसाद ने कहा कि झामुमो के नव गठित हेमंत सोरेन सरकार एवं पूरे मंत्रिमंडल को शुभकामनाएं और बधाई है। उन्होंने कहा कि यह उम्मीद है कि राज्य के विकास में इमानदारी पूर्वक अपने दायित्व का निर्वहन करेंगे। हम सभी लोग यह उम्मीद करते हैं कि उनके नेतृत्व में राज्य का सर्वांगीण विकास हो। उन्होंने कहा कि मंच के माध्यम से यह मांग करते हैं कि ओबीसी को राज्य में जाति आधारित जनगणना



कार्य जल्द से जल्द कराकर जनसंख्या के अनुपात में ओबीसी को सभी क्षेत्रों में हिस्सेदारी व भागीदारी सुनिश्चित करें। मंच का 11 सूत्री मांग में जो राज्य सरकार के अंतर्गत आने वाला क्षेत्राधिकार में है उसे अविलंब लागू करेंगे जो केन्द्र सरकार के अंतर्गत आने वाली मांग राज्य सरकार से पारित कराकर केन्द्र को प्रस्ताव भेजने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि

मंत्रिमंडल के गठन में ओबीसी समाज की उचित भागीदारी नहीं मिल पायी है। यह चिंताजनक है। वहीं केन्द्रीय महासचिव श्रवण कुमार ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने शपथ ग्रहण करने के पश्चात राज्य में जातीय जनगणना कराने के लिए विधानसभा एवं मंत्रिमंडल से प्रस्ताव पारित कराया। परंतु अभी तक जनगणना शुरू नहीं हुई है।

उन्होंने सरकार से अनुरोध किया कि जल्द से जल्द जातीय जनगणना प्रारंभ कराया जाये और ओबीसी को जनसंख्या के अनुपात में हिस्सेदारी दी जाये। इस अवसर पर ललित चौधरी (प्रदेश स्तरीय समाजसेवी), केन्द्रीय कमिटी सदस्य पंकज साहू, अरविंद कुमार, बालमुकुंद शर्मा, धीरज यादव, अनुज कुमार, जितेंद्र शर्मा सहित अन्य लोग मौजूद थे।

अभाविप ने मनाया 76वां स्थापना दिवस



आजाद सिपाही संवाददाता
मेदिनीनगर। विद्यार्थी परिषद के द्वारा 76 वें 9 जुलाई राष्ट्रीय छात्र दिवस धूमधाम से मनाया गया। अभाविप के कार्यकर्ताओं के द्वारा 12 प्रखंडों में अन्वय प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जनता शिवरात्रि महाविद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिता, गणेश लाल अग्रवाल महाविद्यालय में रन फॉर कैम्पस के नियमित दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विचार संगोष्ठी, पौधारोपण, मेहंदी प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता आदि अन्वय प्रकार के कार्यक्रम परिषद के कार्यकर्ताओं के द्वारा किया गया।

सर्वप्रथम परिषद के कार्यकर्ताओं ने प्रमंडलीय कार्यालय गणपति धर्मशाला में 'वन्दे मातरम्' गान के साथ झंडोलन किया तत्पश्चात पूरे जिले में परिषद के कार्यकर्ताओं के द्वारा अन्वय प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जनता शिवरात्रि महाविद्यालय में आयोजित खेलकूद प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्राचार्य एसके पांडे ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन है एवं यह ज्ञान शील और एकता के मूल मंत्र पर चलने वाला छात्र संगठन है।

भाजपा कार्यकर्ता सत्ता के लिए नहीं बल्कि राष्ट्रहित के लिए करते हैं संघर्ष : वीडी राम

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। विश्रामपुर के रामचंद्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय परिसर में मंगलवार को भाजपा का विस स्तरीय कार्यकर्ता अभिनंदन सह संकल्प सभा का आयोजन हुआ। सभा की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष अमित तिवारी व संचालन जिला उपाध्यक्ष रामचंद्र यादव ने किया। सभा में लोक सभा चुनाव में बेहतर करने वाले कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। इसके अलावा आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा को प्रचंड बहुमत के साथ जिताने का संकल्प भी लिया गया। इससे पहले कार्यक्रम का शुरुआत मुख्य अतिथि पूर्व शिक्षा मंत्री सह कोडरमा विधायक डॉ. मीरा यादव, पलामू सांसद विष्णु दयाल राम, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सह विधायक



रामचंद्र चंद्रवंशी व भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य डॉ. ईश्वर सागर चंद्रवंशी ने संयुक्त रूप से पंडित दीनदयाल उपाध्याय और श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर मान्यार्पण कर किया। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. मीरा यादव ने कहा कि भाजपा में उर्जवान कार्यकर्ताओं की लंबी फौज है। इन्हीं संघर्षशील कार्यकर्ताओं के दम पर केंद्र में तीसरी बार मोदी सरकार बनी है। अब इन्हीं समर्पित कार्यकर्ताओं की बदीलत राज्य में भी प्रचंड बहुमत के साथ भाजपा की सरकार बनेगी।

पलामू सांसद विष्णु दयाल राम ने कहा कि विपक्षी गठबंधन के कार्यक्रमों पर विचारवादी पार्टियों के लिए कार्य करते हैं और उनका लक्ष्य मात्र सत्ता हासिल करना होता है। जबकि भाजपा के कार्यक्रमों राष्ट्रवादी पार्टी के सिपाही हैं। जो सत्ता के बजाय राष्ट्र हित के लिए संघर्ष करते हैं। हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। उनके परिवार ही सबकुछ है। उन्होंने लोस चुनाव में कार्यकर्ताओं के मेहनत की जम कर तारीफ की। कहा कि अब बारी झारखंड में

डबल इंजन सरकार बनाने की है। ताकि देश के साथ प्रदेश का भी संपूर्ण विकास हो सके। विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी ने कहा कि किसी भी संगठन का रीढ़ कार्यक्रम ही होता है। उनके ही त्याग तपस्या के बदीलत नेता विधायक और सांसद बनते हैं। इसलिए भाजपा अपने हर एक कार्यक्रम को देवतुल्य मानती है। उन्होंने कहा कि लोक सभा चुनाव में आपने बेहतर से बेहतर किया है। मौके पर भाजपा के गढ़वा जिलाध्यक्ष ठाकुर प्रसाद मेहता, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रूपा सिंह, सोशल मीडिया प्रभारी सोमेश सिंह, भाजपा नेत्री संघ्या सिंह, सुनील पासवान, सांसद प्रतिनिधि अनुज पांडेय, डॉ. वीपी शुक्ला, अमरेश तिवारी सहित काफी संख्या में भाजपा नेता कार्यक्रम मौजूद थे।

मुखिया ने सांसद को झापन सौंप कर झरगड़ा में पुलिस पिकेट की मांग की

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। हुसैनाबाद प्रखंड अंतर्गत झरगड़ा पंचायत के मुखिया अशोक चौधरी ने पलामू सांसद बीडी राम से मिलकर पंचायत क्षेत्र के विकास के लिए 10 सूत्री मांग पत्र सौंपा। इस दौरान मुखिया ने सांसद को बुके देकर स्वागत किया मुखिया द्वारा सांसद को दिए गए मांग पत्र में झरगड़ा मोड़ से डाक बंगला होते हुए सरहु पुल तक पक्की सड़क निर्माण, पत्रा पंचायत सचिवालय से बनसपती गांव तक पक्की सड़क निर्माण, सुपहा माध्यमिक विद्यालय की घेराबंदी एवं चाहरदीवारी निर्माण, झरगड़ा उक्तमित मध्य विद्यालय को उक्तमित कर उच्च विद्यालय की दर्जा देने, ग्राम सुकनाडेरा श्मशान घाट पर शेड निर्माण, झरगड़ा में चंदीप चौधरी के घर से बघमनवा सनोज रजवार के घर तक नाला निर्माण, झरगड़ा में श्मशान घाट की चाहरदीवारी निर्माण, ग्राम सुपहा में श्मशान घाट पर शेड निर्माण, झरगड़ा के गायत्री फ्लड पर स्टेडियम का निर्माण और झरगड़ा पंचायत में पुलिस पिकेट की स्थापना की शामिल है। सांसद श्री राम ने मुखिया को आश्वासन दिया कि प्राथमिकता के आधार पर आपकी सभी मांगों पर यथा संभव प्रयास कर पूरा किया जाएगा। मुखिया अशोक चौधरी ने अपने पंचायत वासियों के तरफ से सांसद का आभार प्रकट किया एवं सर्व प्रथम सड़क की दयनीय स्थिति को सुधारने का अनुरोध किया।



सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में 11 जुलाई से मनाया जायेगा परिवार नियोजन पखवाड़ा

विश्रामपुर/ पलामू (आजाद सिपाही)। विश्व जनसंख्या नियंत्रण दिवस के अवसर पर विश्रामपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में आगामी 11 जुलाई से 31 जुलाई तक परिवार नियोजन पखवाड़ा मनाया जायेगा। इसकी जानकारी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. राजेंद्र कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि पखवाड़ा के दौरान परिवार नियोजन का



स्थायी और अस्थायी दोनों साधन उपलब्ध रहेगा। परिवार नियोजन हेतु कई प्रकार के अस्थायी साधन हैं, जो जरूरतमंदों को निःशुल्क दिया जायेगा। जिसमें माला एन, कंडोम, छाया की गोली और अंतरा सुई सहित अन्य अस्थायी साधन शामिल हैं। डॉ. राजेंद्र कुमार ने यह भी बताया कि किस विधि से परिवार नियोजन के साधनों को अपनाने से कितना प्रोत्साहन राशि दी जाती है, उन्होंने आम लोगों से अपील किया कि परिवार नियोजन सेवा पखवाड़ा का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाए।

जागरूकता अभियान में पुलिस ने आमजनों को दी नये कानून की जानकारी

हरिहरगंज/ पलामू (आजाद सिपाही)। पुलिस अधीक्षक पलामू के निर्देश पर सोमवार को हरिहरगंज पुनि सह थाना प्रभारी चंदन कुमार ने तीन नए कानून के नियमों को लेकर सरसौत स्तरोन्त उच्च विद्यालय में जन जागरूकता अभियान चलाया। जिसमें आमजन और छात्र छात्राओं को नए कानूनों की जानकारी दी गयी। घर बैठे कैसे एकआईआर दर्ज करें इस बारे में भी जानकारी दी गयी। मौके पर पुनि सह थाना प्रभारी चंदन कुमार ने बताया कि एक जुलाई से कानून भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम लागू किए गए हैं। इस बारे में आमजन को जागरूक करने के उद्देश्य से जन जागरूकता कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम में पत्थरा पीकेट प्रभारी मंटु कुमार, एसआई मनोज दास, मुखिया विनय कुमार सिंह, प्रधानाध्यापक अर्जुन राम के अलावे शिक्षकगण, छात्र-छात्राएं एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम में 35 बच्चों के बीच बेबी केयर यूनिट का वितरण
मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। महिला केंद्रित विधियों पर पूरे देश में 100 दिनों का विशेष जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में मंगलवार को एमएमसीएच के मातृ शिशु वार्ड में समाज कल्याण विभाग की ओर से बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ विषयक पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जिले के उपायुक्त शशि रंजन, उप विकास आयुक्त शशीर अहमद, सिविल सर्जन डॉ. अनिल व समाज कल्याण पदाधिकारी नीता चौहान उपस्थित रहे। इस दौरान सभी पदाधिकारियों ने 35 से अधिक नवजात बच्चियों के माताओं के बीच बेबी केयर यूनिट व फल का वितरण किया। किट में नवजात की जरूरत के सभी सामान उपलब्ध थे। सभी बच्चियों के अभिभावकों को स्तनपान की महत्ता के विषय पर भी जागरूक किया गया।



चौकीदार बहाली में अनुसूचित जाति को आरक्षण नहीं देना दलितों के साथ अन्याय : कमलेश सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता
हुसैनाबाद। चौकीदार बहाली में आरक्षण रोस्टर का पालन नहीं किए जाने का हुसैनाबाद विधायक सह एनसीपी के प्रदेश अध्यक्ष कमलेश कुमार सिंह ने कड़ा विरोध किया है। उन्होंने कहा कि पलामू में चौकीदार बहाली की निकले विज्ञापन में अनुसूचित जाति के लोगों को शुरू से दिया जाता रहा है। इस पद पर सेवानिवृत्त या अन्य कारण से सेवा में नहीं रहने वाले चौकीदार के ही रिश्तेदार या पुत्र पुत्री की नियुक्ति की जाती रही है। पलामू जिला में चौकीदारों की नियुक्ति के लिए निकाले गए विज्ञापन में झारखंड सरकार के



चौकीदार का पद अनुसूचित जाति के लोगों को शुरू से दिया जाता रहा है। इस पद पर सेवानिवृत्त या अन्य कारण से सेवा में नहीं रहने वाले चौकीदार के ही रिश्तेदार या पुत्र पुत्री की नियुक्ति की जाती रही है। पलामू जिला में चौकीदारों की नियुक्ति के लिए निकाले गए विज्ञापन में झारखंड सरकार के

आरक्षण रोस्टर का भी पालन नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि झारखंड की हेमंत सोरेन की सरकार दलितों की खुद को हिमायती कहती है। जबकि इसी सरकार के अधीनस्थ अधिकारी चौकीदारों की नियुक्ति के लिए निकाले गए विज्ञापन में अनुसूचित जाति के लोगों को दरकिनार कर दिया है। विधायक श्री सिंह ने कहा कि अधिकारियों के इस मनमाने रवैया के पीछे अनुसूचित जाति के लोगों को चौकीदार के पुत्रपुत्री पद से अलग करना है। उन्होंने कहा कि प्रदेश एनसीपी का अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ इस मामले को लेकर आंदोलन करेगा।

जलमीनार पहाड़ी एरिया में भी बने : अरुणा शंकर

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। प्रथम महापौर ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि मेरे कार्यकाल का फेस 2 शहरी जलापूर्ति योजना का कार्य लगभग शुरू हो चुका है कुछ विवाद के चलते रुका पड़ा था जिसका समाधान पलामू सांसद ने निकाल लिया है मुझे पूरा विश्वास है अगले वर्ष तक कई घरों में पानी मिलने लगेगा। प्रथम महापौर ने कहा कि कल सांसद वीडी रामजी स्वयं साइट पर गए थे जहां कुछ विवाद था जिसका निष्पादन लगभग हो गया है मैं भी मनीयन सी सांसद से अनुरोध करूंगी ऐसी व्यवस्था बनाई जाए जो शहर का अति महत्वाकांक्षी योजना फेस 2 शहरी जलापूर्ति योजना का भी काम बाधित न हो



और बच्चों के लिए खेलकूद स्थान भी सुरक्षित रहे साथी हम हिंदुओं का पूजा स्थान को भी डिस्टर्ब ना किया जाए। प्रथम महापौर ने कहा कि मैं सांसद से

यह भी अनुरोध करूंगी कि पहाड़ी एरिया जहां काफी संख्या में मुस्लिम और कुछ हिंदू भाई भी रहते हैं साथ ही हिंदुओं का श्मशान घाट भी है उस एरिया में भी एक जल मीनार बनवाई जाए ताकि नदी के तट पर बसे पहाड़ी के भाइयों को शुद्ध पानी मिल सके। प्रथम महापौर ने दुख जाहिर करते हुए कहा पप्पू कल जहां से पूरे शहर को पानी सप्लाई होता वहीं के स्थानीय लोगों को पप्पू कल के पाइप लाइन से पानी नहीं मिलता जबकि पाइपलाइन बिछा हुआ है और पहले उसे पाइप लाइन में पानी सप्लाई होता था, मैं नगर आयुक्त से भी अनुरोध करूंगी प्राथमिकता में पंपु कल एरिया में पानी सप्लाई शुरू करावी जाये।

हुसैनाबाद के हरही नदी का अस्तित्व बचाने की पहल नदी किनारे अतिक्रमण हटवाने के लिए सीओ ने किया निरीक्षण

आजाद सिपाही संवाददाता
हुसैनाबाद। शहर की जीवनदायिनी हरही नदी वर्तमान समय में गंभीर संकट से गुजर रही है। नदी में भारी मात्रा में कूड़ा-कचरा भरा हुआ है, जिससे न केवल नदी का सौंदर्य खत्म हो गया है, बल्कि उसका अस्तित्व भी खतरे में पड़ गया है। हरही नदी के किनारे बड़े पैमाने पर अतिक्रमण हो चुका है। लोगों ने नदी के किनारे अवैध निर्माण कर रखे हैं, जिससे नदी का प्राकृतिक प्रवाह बाधित हो रहा है। इसके अलावा नदी की सफाई की कोई ठोस व्यवस्था नहीं होने के कारण कूड़ा-कचरा नदी में जमा होता जा रहा है। इस स्थिति से न केवल नदी के जलस्तर में गिरावट आई है, बल्कि जल की गुणवत्ता भी



बेहद खराब हो गयी है। हरही नदी में बढ़ते कूड़ा-कचरे और अतिक्रमण से पर्यावरण को गंभीर नुकसान हो रहा है। साथ ही नदी के किनारे रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। इस गंभीर स्थिति को देखते हुए हुसैनाबाद के कुछ समाजसेवियों ने स्थानीय अधिकारियों को एक सप्ताह पूर्व ज्ञापन सौंपा था, जिसमें उन्होंने नदी की सफाई और अतिक्रमण हटाने की मांग की थी। इस ज्ञापन के बाद अंचल अधिकारी पंकज

कुमार ने त्वरित कारवाई करते हुए मंगलवार को नदी की स्थिति का जायजा लिया। सीओ ने मौके पर जाकर स्थिति का निरीक्षण किया और नगर पंचायत के कार्यपालक पदाधिकारी को तत्काल इस दिशा में ठोस कदम उठाने के लिये पत्र लिखने की बात कही। सीओ श्री कुमार ने कहा कि सर्वप्रथम नदी की सफाई जरूरी है। फिर भविष्य में किसी भी तरह के अतिक्रमण को भी हटाया जायेगा। साथ ही उन्होंने शहरवासियों से अपील की है कि वे नदी में कूड़ा-कचरा न डालें और पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दें। मौके पर समाजसेवी मुन्ना कुमार देव, पूर्व वार्ड पार्षद नजीर अहमद उर्फ मिथुन खान समेत अन्य लोग मौजूद थे।

ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल में वन महोत्सव

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। मंगलवार को ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल में वन-महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य डॉ. एके सिंह ने एक संस्कृत श्लोक के माध्यम से वृक्ष की उपयोगिता का वर्णन करते हुए कहा कि 'छायाम् अन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयम् आतपे। फलानि अपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषा इव।' अर्थात् जो स्वयं धूप में रहकर दूसरों को छाया करते हैं तथा जिसके फल भी दूसरों के लिए होते हैं। वृक्ष सज्जन पुरुषों के समान हैं। बढ़ती जनसंख्या और आधुनिकीकरण का सीधा प्रभाव हमारे वनों पर पड़ता है, जिसके चलते वनों की कटाई हो रही है। वनों के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के लिए वन महोत्सव देशभर में मनाया जाता है। वन महोत्सव को एक राष्ट्रीय त्योहार घोषित किया गया है। वन महोत्सव की शुरुआत सन 1950 ई. में देश के कृषिमंत्री



कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी द्वारा की गई थी। वन महोत्सव भारत सरकार द्वारा वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए प्रति वर्ष जुलाई के प्रथम सप्ताह में मनाया जाता है। इस सप्ताह में देश के सभी विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, सरकारी दफ्तरों, अनेक संगठनों और संस्थाओं द्वारा सम्पूर्ण देश में पौधे लगाने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन्होंने बताया कि वृक्ष ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं तथा कार्बन-डाई-ऑक्साइड अवशोषित करते हैं। मनुष्य तथा जीव-जंतुओं के लिए वृक्ष बहुत लाभकारी हैं। वृक्षों की बहुत अधिक कटाई होने से वातावरण

में असंतुलन हो गया है और मौसम में काफी परिवर्तन आया है, जिससे धरती के तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। अतः जीवन एवं पृथ्वी, जल-संरक्षण तथा पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए वृक्ष लगाना जरूरी है। अन्त में उन्होंने कहा कि छात्रों को प्रतिवर्ष अपने जन्मदिन पर तथा समाज के सभी लोगों को अपने जन्मदिन एवं वैवाहिक वर्षगांठ पर एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। उसका संरक्षण भी आवश्यक रूप से करना चाहिए। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य सहित सभी शिक्षकों द्वारा भी विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया।

स्पोर्ट्स मंधाना ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज के शुरुआती 2 मुक़ाबलों में 113 और 136 रनों की पारी खेली थी

बुमराह-मंधाना आइसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ पहली बार मेंस और विमेंस कैटेगरी में एक ही देश के खिलाड़ी चुने गये

जसप्रीत बुमराह ने टी-20 वर्ल्ड कप के 8 मैचों में 15 विकेट लिए



दोनों पुरस्कार जीते हैं। मेंस कैटेगरी में बुमराह के अलावा टी-20 वर्ल्ड चैंपियन भारतीय कप्तान रोहित शर्मा और अफगानिस्तान के ओपनर



रहमानुल्लाह गुलबाज भी नॉमिनेट हुए थे, जबकि विमेंस कैटेगरी में इंग्लैंड की मैया बाउचियर और श्रीलंका की विशमी गुणरत्ने दावेदारी में शामिल थी।

बुमराह ने हर मैच में बेहतरीन प्रदर्शन किया : टीम इंडिया के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह का भी टी-20 वर्ल्ड कप में प्रदर्शन काफी बेहतर रहा। उन्होंने 8 मैचों में 4.17 की इकोनॉमी से गेंदबाजी की और 15 विकेट भी लिए। वह टीम इंडिया के दूसरे टॉप विकेट टेकर रहे। वह प्लेयर ऑफ द सीरीज भी रहे।

मंधाना ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ वनडे सीरीज के दो मैचों में दो सेंचुरी लगायी : मंधाना ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज के शुरुआती 2 मुक़ाबलों में 113 और 136 रनों की पारी खेली थी। वहीं तीसरे मैच में उनके बल्ले से 90 रनों की पारी देखने को मिली। इसके बाद टेस्ट में मंधाना ने अपने उसी फॉर्म को जारी रखते हुए 149 रनों की पारी खेली जिसके दम पर भारतीय महिला टीम ने विमेंस टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में एक पारी में सर्वाधिक स्कोर बनाने का रिकॉर्ड भी बना दिया। टीम इंडिया ने अपनी पहली पारी में 603 रन बनाए थे और इसके बाद इस मुक़ाबले को उन्होंने 10 विकेट से जीत लिया था।

NETARHAT RESIDENTIAL SCHOOL, NETARHAT
(An autonomous Institution under School Education & Literacy Dept. Govt. of Jharkhand)
Letter No. - 1644 Date: 09/07/2024
Notice for Engagement of Retired Government Engineer
Sub:- Engagement of Retired Government servants as consultants on contract basis in the school.
1. The Netarhat Residential School, Netarhat invites applications from willing and eligible retired Government employees for their engagement as consultant on contract basis. The number of vacancies to be engaged as consultant is one. The consultant so engaged will look after the inspection, monitoring, estimation, and execution of entire civil work in the school premises.
2. The engagement shall be initially for a period of one year which may be extended or curtailed as per the requirement and satisfactory performance of the consultant. The terms of appointment shall not be extended beyond 5 years after superannuation. The job location shall be at Netarhat.
3. The school authority reserves the right to accept, or reject in part or in full any or all the responses without assigning any reasons whatsoever.
4. The retired Government servant engaged as consultant shall continue to draw Pension and Dearness Relief on pension during the period of his engagement as consultant. The engagement as consultant shall not be considered as a case of re-employment.
5. The interested persons must submit their application in the prescribed format (Annexure-II) [a copy may also be sent through email on - principal.netarhat@gmail.com] as enclosed herewith along with the Annual Performance Appraisal Reports of five years preceding to the retirement, to - The Principal, Netarhat Residential School, AT & PO - Netarhat via Gumla, District - Latehar, Pin - 835218, Jharkhand.
6. The last date for receipt of applications, in the prescribed format is 25.07.2024 upto 05:00 PM. Applications received after due date/time and without supporting documents will not be considered.
7. Complete details can be seen on our school website www.netarhatvidyalaya.com
Sd/-
Principal
PR 329043 Human Resource Development(24-25).D Netarhat Residential School, Netarhat



अनुमति मिलते ही 14 को खुलेगा रत्न भंडार

चाबी काम करे या ना करे, ताला खोला जायेगा, एसओपी तैयार

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। पुरी जगन्नाथ मंदिर रत्न भंडार निगरानी समिति के अध्यक्ष न्यायमूर्ति विश्वनाथ रथ ने कहा है कि सरकार अनुमति देती है तो 14 जुलाई को रत्न भंडार को खोला जायेगा। उन्होंने कहा कि सरकार को फैसले से अवगत कराया जा रहा है। विवरण प्रबंधन समिति को दिया जायेगा, जिसके बाद प्रबंधन समिति सरकार के पास जायेगी। सरकार के निर्देश आने पर रत्न भंडार खोला जा सकता है।



14 तारीख को रत्न भंडार खोलेंगे।

उन्होंने कहा कि 14 जुलाई को प्रशासन, चाबी कमेटी को सौंपेगा। रत्न भंडार अलंकार को स्थानांतरित करने के लिए जगह ठीक कर ली गयी है। इसके बाद रत्नों की गिनती और मरम्मत का काम चलेगा। इसके लिए सरकार

आभूषणों की गिनती के लिए मेट्रोलेजिस्ट ग्रुप और गहने के प्रशासन, चाबी कमेटी को सौंपेगा। इस समय के दौरान दर्शन में कोई अनुसुविधा ना हो, इसके लिए ध्यान दिया जायेगा। जस्टिस विश्वनाथ रथ ने भक्तों से सहयोग करने को अनुरोध किया है।

रेलवे ने भुवनेश्वर स्टेशन पर क्रू लांबी को आधुनिक सुविधाओं के साथ अपग्रेड किया

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। लोको पायलटों, सहायक लोको पायलटों और गाड़ों की भलाई को प्राथमिकता देने के निरंतर प्रयास में, ईस्ट कोस्ट रेलवे ने भुवनेश्वर स्टेशन पर क्रू लांबी को आधुनिक सुविधाओं के साथ अपग्रेड किया है। उचित आराम और विश्राम की महत्वपूर्ण आवश्यकता को पहचानते हुए, भुवनेश्वर में विश्राम कक्ष और लांबी को अधिकतम आराम और सुविधा के लिए घर जैसा माहौल प्रदान करने के लिए सुसज्जित किया गया है। प्रत्येक विश्राम कक्ष में आरामदायक बिस्तर, एयर कंडीशनिंग और आरामदायक लाउंज की सुविधा है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि चालक दल के सदस्य अपने कठिन कर्तव्यों के बीच तरोताजा



हो सकें। भुवनेश्वर में क्रू लांबी को विशेष रूप से राज्य के बाहर के क्रू सदस्यों के लिए घरेलू माहौल बनाने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया है। यह पहल सुनिश्चित करती है कि घर से दूर होने पर भी उन्हें सहजता महसूस हो और उनकी अच्छी देखभाल हो।

साफ-सफाई और स्वच्छता के अच्छे मानकों को बनाये रखते हुए, सुविधाओं को सावधानीपूर्वक रखा जाता है, जिससे सभी कर्मचारियों को एक सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण मिलता है। प्रशिक्षित पाक कर्मचारियों द्वारा तैयार पौष्टिक और स्वादिष्ट भोजन उच्च गुणवत्ता वाले क्रांकी और कटलरी से सुसज्जित भोजन क्षेत्रों में परोसा जाता है, जो समग्र भोजन अनुभव

को बढ़ाता है। विश्राम और अवकाश में सहायता के लिए, क्रू लांबी टेलीविजन, वाचनालय और फिटनेस उपकरण सहित मनोरंजक सुविधाओं से सुसज्जित है। ये सुविधाएं चालक दल के सदस्यों को उनके डाउनटाइम के दौरान आराम करने और रिचार्ज करने में मदद करती हैं। लोको पायलटों, सहायक लोको पायलटों और गाड़ों के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों को पहचानते हुए, ईस्ट कोस्ट रेलवे उनके और उनके परिवार के सदस्यों के लिए नियमित परामर्श सत्र भी प्रदान करता है। ये सत्र घर पर एक सहायक और सकारात्मक माहौल सुनिश्चित करने के लिए डिजाइन किये गए हैं, जो उनके समग्र कल्याण के लिए इसीओआर की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ओड़िशा में नाबालिग से दुष्कर्म, अदालत ने आरोपित को सुनाई 20 साल जेल की सजा

- आरोपित पर लगाया 5000 का जुर्माना
- 28 सितंबर, 2023 की है यह घटना

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। स्पेशल प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रेन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंसेस एक्ट (पांचवें) बालेश्वर अदालत के न्यायाधीश रंजन कुमार सुतार ने एक व्यक्ति को 2023 में एक नाबालिग लड़की से दुष्कर्म करने के लिए दोषी ठहराते हुए उसे 20 साल जेल की सजा सुनायी है। मरीन

पुलिस स्टेशन क्षेत्र के श्रेख मंताज ने पीड़िता को चॉकलेट का लालच दिया, जब वह 28 सितंबर, 2023 को अपने घर के सामने खल रही थी और उसे एक समानसा जगह पर ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। **कब सामने आया मामला?** : मामला तब सामने आया जब नाबालिग लड़की ने परिवार के सदस्यों को अपनी आपबीती सुनाई, जिसके बाद मरीन पुलिस स्टेशन में मंताज के खिलाफ मामला दर्ज किया गया। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मंताज को गिरफ्तार कर अदालत भेज दिया

था। **कोर्ट ने सुनायी सजा** : मामले की सुनवाई करते हुए पांचवें कोर्ट के जज ने 16 गवाहों के बयान और 20 दस्तावेजों के आधार पर मंताज को दोषी करार देते हुए उसे 20 साल कैद की सजा सुनायी। अदालत ने उस पर 5000 रुपये का जुर्माना भी लगाया, जिसमें विफल रहने पर उसे दो और साल जेल की सजा काटनी होगी। इसके अलावा अदालत ने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को पीड़िता को चार लाख रुपये का मुआवजा देने का निर्देश दिया।

महिला ने ओड़िशा सीएम के काफिले को रोका



आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। भुवनेश्वर के रसूलगढ़ स्वयंवर पर आज शाम उस समय बड़ा ड्रामा देखने को मिला, जब एक महिला ने ओड़िशा के मुख्यमंत्री मोहन माझी के काफिले को रोकने की कोशिश की। खबरों के मुताबिक मुख्यमंत्री शाम करीब साढ़े पांच बजे राजधानी के वीएसएस नगर में एक कार्यक्रम में शामिल होने के बाद अपने कार्यालय लौट रहे थे। पुलिस ने आम लोगों को रोककर सीएम का रास्ता बनाने की कोशिश की। हालांकि, रसूलगढ़ चौक पर एक महिला जो जाने के लिए इंतजार कर रही थी, ने पुलिस से तीखी बहस की और पूछा कि उन्होंने 15 मिनट से अधिक समय तक सड़क क्यों रोकी हुई

है। पुलिस के स्पष्टीकरण के बावजूद, जिन्होंने कहा कि सुरक्षा कारणों से सड़क को अवरुद्ध किया गया है, क्रोधित महिला अपनी कार से बाहर निकली और सीएम के काफिले के सामने खड़ी हो गयी। महिला पुलिसकर्मी सहित पुलिस अधिकारियों ने महिला से बार-बार सीएम के काफिले के लिए रास्ता देने को कहा। हालांकि, वह मौके से हटने को तैयार नहीं थी और करीब 3-5 मिनट तक सड़क के बीच में खड़ी रही। लेकिन जल्द ही महिला को किनारे कर दिया गया और सीएम का काफिला निकल गया। इस बीच, मंचेश्वर पुलिस ने महिला को पूछताछ के लिए हिरासत में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

भुवनेश्वर में बंद घर में नाबालिग का शव मिला

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। एक चौकाने वाली और दुःखद घटना में, भुवनेश्वर में एक बंद घर से एक नाबालिग लड़की का शव बरामद किया गया। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार, यह घटना भुवनेश्वर के मंचेश्वर पुलिस स्टेशन की सीमा के अंतर्गत श्रीराम नगर झुग्गी बस्ती में हुई है। सबसे चौकाने वाली बात यह है कि, लड़की को एक कमरे में लटका हुआ पाया गया, जिसे बाहर से बंद कर दिया गया था। शव पंखे से लटका हुआ पाया गया। मृतक नाबालिग लड़की उत्तर प्रदेश की रहने वाली है। यह झुग्गी में एक अन्य महिला के साथ रह रही थी। महिला ने कहा है कि लड़की ने शायद आत्महत्या कर ली है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। हालांकि, शुरूआती जांच में इस मामले में कुछ गड़बड़ी की आशंका जतायी गयी है। इस मामले में विस्तृत रिपोर्ट का इंतजार है।

महिला पुलिसकर्मी सहित पुलिस अधिकारियों ने महिला से बार-बार सीएम के काफिले के लिए रास्ता देने को कहा। हालांकि, वह मौके से हटने को तैयार नहीं थी और करीब 3-5 मिनट तक सड़क के बीच में खड़ी रही। लेकिन जल्द ही महिला को किनारे कर दिया गया और सीएम का काफिला निकल गया। इस बीच, मंचेश्वर पुलिस ने महिला को पूछताछ के लिए हिरासत में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

डीडओ वार्षिक एवएससी, मध्यमा और एसओएससी के प्रमाण पत्रों के वितरण की निगरानी करेंगे



आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (बीएसई) के परीक्षा नियंत्रक ने वार्षिक एचएससी, मध्यमा और एसओएससी परीक्षा, 2024 के प्रमाण पत्र वितरण की निगरानी से संबंधित राज्य के सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को एक पत्र जारी किया है। वार्षिक एचएससी, मध्यमा और एसओएससी परीक्षा, 2024 के उम्मीदवारों के सभी मूल उत्तीर्ण प्रमाण पत्र (ओपीसी) सभी जिलों में एक ही दिन यानी 9 जुलाई को संबंधित हाई स्कूल

के प्रधानाध्यापक/प्रधानाध्यापिका द्वारा उम्मीदवारों को वितरित किये जायेंगे। शेष प्रमाण पत्र, यदि कोई हों, तो उन्हें अगले दिन अर्थात् 10 जुलाई को छात्रों को वितरित कर दिया जायेगा। जिला शिक्षा अधिकारियों से अनुरोध किया गया है कि वे क्षेत्रीय पदाधिकारियों पर निगरानी रखें, ताकि यह देखा जा सके कि उनके अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी उच्च विद्यालयों में प्रमाण पत्रों का वितरण निर्धारित तिथि पर ठीक से हो जाये।

वर्मा प्रेस प्रा० लि० रांची

Verma's Today

शृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं—

Class - X	Class - IX
Hindi ₹ 140	Hindi ₹ 140
English ₹ 140	English ₹ 140
Mathematics ₹ 140	Mathematics ₹ 140
Science ₹ 140	Science ₹ 140
Social Science ₹ 140	Social Science ₹ 140
Sanskrit ₹ 120	Sanskrit ₹ 120
Hindi - B ₹ 140	Hindi - B ₹ 80
Hindi Vyakaran - II ₹ 120	Hindi Vyakaran - II ₹ 120
English Grammar - II ₹ 120	English Grammar - II ₹ 120
Sanskrit Vyakaran - II ₹ 100	Sanskrit Vyakaran - II ₹ 100
Hindi Practical ₹ 55	Hindi Practical ₹ 55
English Practical ₹ 55	English Practical ₹ 55
Maths. Practical ₹ 65	Maths. Practical ₹ 55
Science Practical ₹ 65	Science Practical ₹ 70
S. Science Practical ₹ 65	S. Science Practical ₹ 65
Sanskrit Practical ₹ 55	Sanskrit Practical ₹ 55
Maths. Practical (Combined) ₹ 90	Maths. Practical (Combined) ₹ 75
Science Practical (Combined) ₹ 90	Science Practical (Combined) ₹ 75

English Medium

Mathematics ₹ 200	Mathematics ₹ 130
Science ₹ 200	Science ₹ 200
Social Science ₹ 200	Social Science ₹ 130
Maths. Practical ₹ 80	Maths. Practical ₹ 80
Science Practical ₹ 80	Science Practical ₹ 80
S. Science Practical ₹ 80	S. Science Practical ₹ 80

मिलते-जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान!

ओड़िशा में डेंगू ने बढ़ायी टेंशन, 200 से ज्यादा मामला आया सामने, स्वास्थ्य विभाग हाई अलर्ट

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। प्रदेश में वाद-वारिशा के बाद अब डेंगू के मामले धीरे-धीरे सामने आने लगे हैं। राज्य के अन्य जिलों की तुलना में खुर्दा जिले में मामलों की संख्या बढ़ रही है। पिछले वर्षों में हुए डेंगू के प्रकोप को देखते हुए राज्य का स्वास्थ्य विभाग हाई अलर्ट पर है। ऐसे में पिछले पांच वर्षों में जो क्षेत्र डेंगू के लिए हाटस्पॉट थे, उनकी निगरानी और पहचान करने के स्वास्थ्य विभाग ने आदेश दिये हैं। स्वास्थ्य विभाग ने कहा है कि ऐसे जगहों का अभी से सर्वेक्षण शुरू कर दिया जाये।



संक्रमण मानसून और उसके बाद के दौरान देखा जाता है। ऐसे में आपको पहले से सावधान रहना होगा। इसे ध्यान में रखते हुए, आवश्यक संख्या में स्वयंसेवकों, डायग्नोस्टिक किट, दवाओं का स्टॉक करने के लिए भी उन्होंने निर्देश दिया है। जिला-नगरपालिका स्तर पर सभी हितधारकों की बैठक आयोजित करने के लिए संयुक्त कार्ययोजना तैयार की स्वास्थ्य सचिव ने कहा है। जनता को जागरूक करने के अलावा, कीट नियंत्रण कार्यक्रमों, परीक्षण, उपचार और समय पर रेफरल के लिए अन्य सहयोगी विभागों के साथ समन्वय को महत्व देने पर उन्होंने बल दिया है।

डेंगू से निपटने के लिए तैयारी : स्वास्थ्य सचिव ने कहा है कि संक्रमण की स्थिति से निपटने के लिए जिला और ब्लॉक आरआरटी की टीमों स्टैंडबाय पर रहेंगी। डेंगू-मलेरिया संक्रमण को रोकने के लिए इसके स्रोत को नष्ट करने के साथ ही रक्त बैंक में रक्त संग्रहित रखने को कहा है। जिलों को निर्देश दिया गया है कि वे विशेष रूप से अस्पतालों में डेंगू वॉर्ड खोलें और उन्हें मच्छरों के खतरे से सुरक्षित रखने तथा सप्ताहिक डाय डे पालन करें। **कितने सामने आये मरीज** : जानकारी के मुताबिक राज्य में अब तक डेंगू के 200 से अधिक मरीजों की पहचान की जा चुकी है। वहीं, खुर्दा जिले में संक्रमितों की संख्या तीन अंकों में पहुंच गई है। जिले में 50 फीसदी मरीज अकेले भुवनेश्वर में मिले हैं।

रत्न विक्रेता **जय जाला दी** **रत्न विक्रेता**

ज्योतिष ग्रहर्त्न केन्द्र

ज्योतिष शास्त्र • वास्तु शास्त्र • हस्त शास्त्र • अंक शास्त्र

पंडित शशि कान्त मिश्रा

पता - लाईन टैंक रोड, गोपाल गंज गली, ऑपोजिट-मुक्तपूर्व वारगेन बाजार, रांची
फोन :- 9334718296, 9835195382, 9431792761